चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 16.10.22 | 10 | 2-8 |

## नवीनतम सिफारिशों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. काम्बोज

# चने की 4 समेत 8 नए किस्मों की सिफारिशें

दो दिवसीय कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ मंथन किया।

हिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रखी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। नुमोदित की गई आठ नई

हिसार। कार्यशाला को संबोधित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्टूबर के आखिरी व नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेंहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

### उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

### पराली प्रबंधन पर चर्चा

मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 16.10.22 | 2 | 5-8 |

# नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज

## ■ वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन

हिसार,15 अक्तूबर (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई, जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की।

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

### कार्यशाला में नई किस्मों की सिफारिश की

कार्यशाला में अनुमोदित की गई 8 नई सिफारिशों में 4 नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एच.सी.-6), जई की एच.एफ.ओ.-611 एवं एच.एफ.ओ.-707 तथा चंद्रशूर की एच.एल.एस.-4 को शामिल किया गया है।

इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेहूं के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

### फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना आवश्यक : डॉ. हरदीप

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है, बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है।

उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 16.10.22 | 4 | 5-8 |

कार्यशाला

एचएयू में जुटे प्रदेशभर के वैज्ञानिक और कृषि अधिकारी

# आठ नई सिफारिशों में चने की चार नई किस्में

अमर उजाला ब्यूरो

कृषि संबंधी समस्याएं व वैज्ञानिक उसी के अनुरुप करें शोध : कुलपति

हिसार। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और वैज्ञानिकों ने रबी फसलों की बिजाई पर परिचर्चा की। एचएयू के कुलपति ने अफसरों को कृषि संबंधी समस्याएं वैज्ञानिकों को बताने और वैज्ञानिकों से उसी अनुरूप शोध करने पर जोर दिया।

उन्होंने कार्यशाला में अनुमोदित की आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों का आह्वान करते कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की नई शोध की गई विधियों, बीजों व तकनीकियों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक है।

समारोह के आखिरी दिन महानिदेशक ने कृषि विभाग के अफसरों को सचेत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की अगली किस्त जल्दी ही बंटने वाली है। इससे पहले लाभ पाने वाले किसानों का पूरा विवरण दुरुस्त कर लें।

हिसार। एचएयू में कृषि अधिकारियों के दो दिवसीय गोष्ठी के समापन अवसर पर मंचासीन अतिथिगण। संवाद

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 16.10.22 | 10 | 6-8 |

## नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 15 अक्तूबर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई, जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की।

मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए

उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेंहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक : डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सच कहूँ | 16.10.22 | 5 | 1 |

## कृषि अधिकारियों संग वैज्ञानिकों ने किया मंथन

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेंहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 16.10.22 | 2 | 5-6 |

## विज्ञानियों ने रबी फसलों की समग्र सिफारिशों पर की चर्चा

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला में विज्ञानियों ने रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की। कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में हैं। जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 किलो ग्राम सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पोटाश वाली जमीन में 8 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेंहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्राम नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है। मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। डा. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल के अवशेष को जलाने से रोकना जरूरी है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 16.10.22 | 2 | 4-5 |

## कृषि तकनीकों को किसानों तक पहुंचाना जरूरी : वीसी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| आज समाज | 16.10.2022 | ----- | ------- |

# नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानो तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. बी.आर. काम्बोज

- वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन

प्रवीन कुमार




हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने फसली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रसूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना बाटा में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पैटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पैटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक खाद उत्पादन तथा गेहूं के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. पैंटयो प्रति एकड़ का छिड़काव भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्रारंभ करके चलाते हैं ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

## फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक: डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने फसली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में अनाज की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पांच बजे | 15.10.2022 | ----- | ------- |

# नवीनतम कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज




हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने फसली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रसूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पोटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक खाद उत्पादन तथा गेहूं के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ से करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते है तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते है ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

**फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक: डॉ. हरदीप सिंह**

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने फसली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल अधिकारी डॉ. राम सिंह [illegible] ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| --- | --- | --- | --- |
| सिटी पल्स | 15.10.2022 | ----- | ------- |

# नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरीः प्रो. बी.आर. काम्बोज

**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला, वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन**

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश के किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय




मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पोटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक खाद उत्पादन तथा गेहूं के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. मैंकोजेब प्रति एकड़ से कारगर भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर आते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं ताकि वे समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

## फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यकः डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल अधिकारी डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| चिराग टाइम्स | 15.10.2022 | ----- | ------- |

# कृषि तकनीकों को किसानो तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आहवान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेंहू के पौला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं।

## उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना बहुत जरूरी : डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| समस्त हरियाणा | 15.10.2022 | ----- | ------- |

# नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानो तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

[illegible]




[illegible]

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हिन्दुस्थान समाचार | 15.10.2022 | ----- | ------- |


## हिसार: कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के तालमेल से ही किसानों का भला संभव: कम्बोज

15 Oct 2022 19:56:51

नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी

वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन

हिसार, 15 अक्टूबर (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते है ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

कुलपति बीआर कम्बोज शनिवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के समापन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. दवा सिंह सहारण ने सभी का धन्यवाद किया।

16 Oct 2022
हरियाणा के सभी
प्रदेश में 18 को प्रद
पालिका कर्मी पड़ी

16 Oct 2022
नारी शक्ति पुरस्
8 मार्च, 2023 को
चंडीगढ़, 16 अक्टू

16 Oct 2022
कैथल: पंचायत
कैथल खंड में सबसे
संवेदनशील ग्रामीण

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 17.10.22 | 2 | 7-8 |

## कृषि विशेषज्ञ की सलाह

प्रो. बीआर कांबोज

# खेत को तैयार कर फूलगोभी की दूसरी फसल लगाएं

हिसार। फूलगोभी फसल के तैयार फूलों को काट कर बाजार में भेजें। इस माह पूसा कातकी किस्म की फसल समाप्त हो जाएगी। खेत को तैयार करके फूलगोभी की दूसरी फसल लगाएं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि अर्द्ध पछेती किस्म हिसार-1 के खेत की देखभाल करें। पहली बार पौधरोपण के लगभग 3-4 सप्ताह बाद और दोबारा में फल बनते समय। फूलगोभी की पछेती किस्म स्नोबाल-16 की पौध नर्सरी में तैयार करें। फूलगोभी की पछेती किस्म स्नोबाल-16 की पौध तैयार के लिए बीज को बोने से पहले कैप्टान से उपचारित करें। अंकुरण के तीसरे व दसवें दिन बाद 0.2 प्रतिशत कैप्टान के घोल से नर्सरी को सिंचित करें। हानिकारक कीड़ों से रक्षा के लिए 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ईसी को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ खेत में छिड़कें। दवा का इस्तेमाल आवश्यकता होने पर 10 दिनों के दोबारा करें। दवा के इस्तेमाल के बाद फसल को एक सप्ताह तक खाने के काम में न लें। इन कीड़ों की रोकथाम बंदगोभी, मूली आदि में इसी प्रकार से करें। डायमंड बैक मॉथ के लिए 400 ग्राम बेसिलस थूरिंजिएंसिस बायोआस्प प्रति एकड़ खेत में छिड़कें। ब्यूरो

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 17.10.22 | 3 | 4-6 |

**जायका:** एचएयू ने गेहूं से एलर्जी से बचाव के मद्देनजर खाद्य प्रोडक्ट बनाए

## एचएयू ने तैयार किए ग्लूटन फ्री ज्वार और खजूर के बिस्किट, जो हीमोग्लोबिन बढ़ाने में सहायक

महबूब अली| हिसार

एचएयू के इंद्रा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग के वैज्ञानिकों और रिसर्च स्कॉलर ने रिसर्च के बाद ग्लूटन फ्री उत्पात तैयार किए हैं, जिन्हें गेहूं से एलर्जी वाले बच्चे, बड़े और बूढ़े खा सकेंगे। यही नहीं विशेष प्रकार की चॉकलेट बॉल्स भी तैयार की गई हैं, जिससे मोटापा बढ़ने का भी खतरा नहीं रहेगा। साथ ही, चॉकलेट मिठाई का स्वाद देगी। एचएयू के खाद्य एवं पोषण विभाग की वैज्ञानिक डॉ. उर्वशी नांदल ने बताया कि आज के समय में लोगों के अंदर गेहूं से एलर्जी की समस्या रहती है। जिसके मद्देनजर ग्लूटन फ्री यानी बेसन, जौ और ज्वार आदि से उत्पाद तैयार

किए गए हैं, जिनके सेवन से गेहूं से एलर्जी वाले लोगों को परेशानी नहीं होगी। ज्वार और खजूर के बिस्किट तैयार किए हैं, जो वजन कम करने के लिए रक्त परिसंचरण, हीमोग्लोबिन की क्षमता बढ़ाने में लाभदायक है। यह बिस्कुट ग्लूटन फ्री होने के साथ साथ लैक्टोज फ्री भी है।

**तैयार चॉकलेट बॉल्स मिठाई का देगी स्वाद :** कनडेंस्ड मिल्क द्वारा एक साथ रखे गए क्रश किए हुए बिस्किट, डेसीकेटिड नारियल और कोको पाउडर के संयोजन से एक रोमांचक माउथ फील और अच्छा स्वाद देने वाली चॉकलेट बॉल्स तैयार की गई है। इसकी खास बात यह है कि इसे मिठाई की जगह भी प्रयोग में लाया जा सकता है। बेसन से तैयार किए गए बिस्किट को गेहूं की एलर्जी से पीड़ित व्यक्ति, बच्चा आराम से सेवन कर सकता है। और यह प्रोटीन से भी भरपूर है। एचएयू के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कहा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कई प्रोडक्ट तैयार किए हैं। लोगों को प्रोडेक्ट बनाने के बारे में निःशुल्क जानकारी भी दी जाती है ताकि वह खुद उत्पाद बना कर ना केवल अपनी सेहत ठीक रखें अपितु स्वरोजगार स्थापित कर सके।